प्रातः क्लास 15-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझा रहे हैं। पढ़ा भी रहे हैं। क्या समझा रहे हैं, मीठे2 बच्चों तुमको एक तो बड़ी2 हयाती चाहिए। क्योंकि तुम्हारी आयु बहुत बड़ी थी। 150 वर्ष की आयु थी। कैसे बड़ी आयु मिलती है? जब तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। जब तुम सतोप्रधान थे तो तुम्हारी आयु भी बड़ी थी। अभी फिर ऊपर चढ़ रहे हो। जानते हो हम तमोप्रधान बने हैं तो हमारी आयु छोटी हो गई है। तन्दुरुस्ती भी ठीक नहीं थी। बिल्कुल ही रोगी बन गये थे। यह जीवन पुरानी है। नई से भेंट की जाती है। अभी तुम जानते हो बाप हमको बड़ी आयु बनाने की युक्ति बता रहे हैं। बनाते नहीं हैं, युक्ति बतलाते हैं। मीठे2 बच्चों मुझे याद करेंगे तो तुम जैसे सतोप्रधान, बड़े आयु वाले, तन्दुरुस्त बन जायेंगे। आयु छोटी होने से मरने का डर रहता है। तुमको तो गैरन्टी मिलती है ऐसे अचानक कब मरेंगे नहीं। बाप को याद करते रहेंगे तो आयु भी बड़ी होगी। और सभी दुःख दूर हो जावेंगे। कोई भी किसम का दुःख नहीं होगा। अच्छा और तुमको क्या चाहिए। तुम कहते हो उच्च पद भी चाहिए। तुमको मालूम नहीं था कि ऐसा भी पद मिल सकता है। अभी बाप युक्ति बतलाते हैं ऐसे करो। एमआबजेक्ट सामने है। तुम ऐसा पद पा सकते हो। यहां ही दैवीगुण धारण करनी है। अपने से पूछना है हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है। अवगुण भी अनेक प्रकार के होते हैं। बीड़ी पीना, चाय पीना, कोई छीछी चीज़ चीज़ खाना यह अवगुण है। सब से बड़ा अवगुण है विकार का। जिसको ही बैड कैरेक्टर्स, गन्दी चाल कहते हैं। बाप कहते हैं तुम विषस बन पड़े हो अभी वायसलेस बनने की युक्ति तुमको बतलाते हैं। इसमें इन विकारों के अवगुण को छोड़ देना पड़ता है। कब भी विषय न बनना है। इस जन्म में जो सुधरेंगे वह तो सुधारा 21 जन्म तक चलना है। सब से जरूरी बात है वायसलेस बनना। जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर चढ़ा हुआ है वह योगबल से ही उतरेगा। बच्चे जानते हैं जन्म-जन्मान्तर तो हम विषय बने हैं। अभी बाप से हम प्रतिज्ञा करते हैं कि कब विषस न बनेंगे। बाप ने कहा है अगर विषस बने तो सजा दण्ड भी खाना पड़ेगा। और फिर पद भी भ्रष्ट बन पड़ेगे। क्योंकि निन्दा कराई ना। तो गोया उस तरफ विषस मनुष्यों के संग में चला गया। ऐसे बहुत चले जाते हैं। अर्थात हार खा लेते हैं। आगे तुमको पता नहीं था कि यह धंधा (विकार का) न करना चाहिए। कोई2 अच्छे2 बच्चे2 होते हैं हम ब्रह्मचर्य में रहेंगे। सन्यासियों को देखा समझते हैं पवित्रता अच्छी है। पवित्र और अपवित्र। दुनिया में पवित्र तो बहुत रहते हैं। आत्मा भी अपवित्र बनना है। इसलिए फिरन स्नान करना होता है। अपवित्रता अनेक प्रकार की होती है। किसको दुःख देना भी अपवित्र कर्तव्य है। बाप समझाते हैं जन्म-जन्मान्तर तुम ने जो किया है वह सभी आदतें अभी मिटानी है।

अभी तुमको सच्चा महान आत्मा बनना है। सच्ची2 महात्मा यह सतयुग के (स्त्रेल0 ना0) ही हैं। कोई तो यह बन न सके। क्योंकि सभी तमोप्रधान हैं। ग्लानी भी बहुत करते हैं। उन्हों को पता नहीं पड़ता कि हम यह क्या करते हैं। एक होता है गुप्त पाप। दूसरा प्रत्यक्ष। बाप को भितर ठिक्कर में कहना यह है गुप्त पाप, बेसमझ। यह है ही तमोप्रधान बेसमझ की दुनिया। बच्चे जानते हैं बाप हमको अभी समझदार बना रहे हैं इसलिए उनको सभी याद करते हैं। सब से अच्छी सजा तुमको मिलती है। पावन बनना है। और फिर और भी अवगुण चाहिए। देवताओं के आगे जो तुम महिमा गाते हो अभी तुमको ऐसा बनना है। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों तुम कितने गुल2 फूल थे। फिर कांटे बन पड़े हो। अभी बाप को याद करो। तो याद से तुम्हारी आयु भी बड़ी होगी, पाप भी भस्म होंगे। सिर से बोझा हल्का हो जावेगा। अपनी पूरी सम्भाल करनी है। हमारे में क्या अवगुण है जो निकालनी है। जैसे नारद का मिसाल है। उनको कहा तुम लायक हो? देखा कि नहीं। भक्तों में सभी अवगुण होते हैं। सब से जास्ती अवगुण भक्तों में होती है जो ग्लानी करते हैं। बाप जो सर्व की सद्गति करते हैं ऐसे बाप को बैठ ग्लानी करते हैं। यह भी तुमको अभी पता पड़ा है। पहले तो जैसे जड़लोग थे। अब बाप आया है तुमको कितना ऊंच बनाते हैं। बाप के तुम बच्चे भी हो ना। जैसे कोई का बाप महाराजा हो

हैतो कहेंगे ना हमारा बाबा महाराजा है। बाबा बहुत सुखदेने वाला है सारी प्रजा को। कब भी क्रोध नहीं करते हैं। जो अच्छे स्वभाव के होते हैं उनको कब क्रोध नहीं आता। अभी तो आस्ते2 सभी कलायें उतरती गई है। दिन प्रति दिन अवस्था उतरती गई है। सभी अवगुण प्रवेश करते गये हैं। अभी आकर बिल्कुल पट पड़े हैं। तमोप्रधान की भी जैसे अन्त आकर हुई है। कितना दुःखी हो पड़े हैं। तुमको ही बहुत सहन करना पड़ता है। अभी अविनाशी सर्जनद्वारा तुम्हारी दवाई हो रही है। बाप कहते हैं यह 5विकार तोघड़ो2 तुमको सतोंदेंगे। तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे बाप को याद करने का उतना ही माया तुमको नीचे गिराने की कोशिश करेंगी। तुम्हारी अवस्थाऐसी मजबूत होनी चाहिए जो कोई भी माया का तूफान हिला न सके। रावण कोई और चीज़ नहीं है। वा कोई मनुष्य नहीं है। 5विकारों रूपी माया को ही रावण कहा जाता है। मनुष्य नहीं जानते। तो वह रावण पुतला बना देते हैं। अभी तुम समझते हो वह सभी हैं आसुरी रावण सम्प्रदाय। तुमको पहचानते ही नहीं है कि आखीर में यह है कौन। यह ब्रह्मा कुमारियां क्या समझाती है। सच्चाई में कोई जानते नहीं। यह ब्रह्मा कुमारियाँ क्यों कहलाती है। ब्रह्मा किसका सन्तान है। इन बातों को कोई भी नहीं जानते। अभी तुम बच्चे यहां बैठे हो, जानते हो हमको वापस घर जाना है। यह बाप बैठ तुम बच्चों को शिक्षा देते हैं। आयुष्मान भव। धनवान भव ···· तुम्हारा सभी मनोकामनायें पूरा करने वरदान देते हैं। परन्तु सिर्फ वरदान से कोई नहीं होता। मेहनतकरनी है। हरेक बात समझनी है। अपने को राजतिलक बनाने का अधिकारीबनाना है। बाप अधिकारी बनाते नहीं है। तुम बच्चों को शिक्षा देते हैं ऐसे2 करो। पहले नम्बर की शिक्षा देते हैं मामेकं याद करो। मनुष्य याद नहीं करते हैं क्योंकि वह जानते ही नहीं। तो याद भी रांग है। कहते हैं सब ईश्वर सर्वव्यापी है। फिर शिव बाबा को याद कैसे करेंगे। एक तरफ देखो शिव के मंदिर में जाकर पूजा करते हैं वहां ही फिर पूछो इनका आक्युपेशन बताओ? तो कहेंगे भगवान तो सर्वव्यापी है। पूजा करते हैं उन से रहम मांगते हैं, मांगते हुये किसी कोई पूछता भगवान कहां है तो कहते सर्वव्यापी है। चित्र के सम्मुख क्या करते हैं और फिर चित्र सम्मुख नहीं तो कला काया हो चट हो जाती। अभी तुम कृष्ण के लिए थोड़ेई कहेंगे कि वह विकारी था। कितनी बातें बनाई है। स्त्रीयों को भगाते थे, घर-बार छुड़ाते थे। क्यों भगाते थे, किस लिए, पटरानी बनाने के लिए। तो जरूर भगवान ने राजयोग सिखाया होगा ना। कृष्ण कैसे सिखावेंगे। कृष्ण तो खुद राजाई में था ना। जो राजा था उसका प्रिन्स था। तो भक्ति-मार्ग में कितनी भूलें कर दी हैं। फिर भी भक्ति में कितना प्यार है। कृष्ण के लिए कितना निर्जल आद करते है। यहां तुम पढ़ रहे हो और वह भक्त लोग क्या करते हैं। तुमको अभी हंसी आती है। ड्रामा अनुसार भक्त भक्ति करते हैं। कदम नीचे ही उतरते आये हैं। ऊपर तो कोई चढ़ नहीं सकते। कितना भी भल जोर से भक्ति करे। जो भी सेकण्ड गुजरता है भक्ति से नीचे ही उतरते हैं। अभी यह है पुरुषोतम संगम युग। जिसको कोई को पता नहीं। अभी तुम पुरुषोतमदेवता बनने लिए पुरुषार्थ करते हो। टीचर स्टुडन्ट का सर्वेन्ट होता है ना। स्टुडन्ट्स की सर्विस करते हैं। गवर्मेन्ट भी सर्वेन्ट है। स्टुडन्ट की सेवा करता है। बाप भी कहते हैं मैं भी तुम्हारी सेवा करता हूं। तुमको पढ़ता भी हूं। सभी आत्माओं का बाप है। टीचर भी बनते हैं। सृष्टि चक्र के आदि मध्य अन्त का ज्ञान भी सुनाते हैं। यह ज्ञान और कोई मनुष्य में हो न सके। कोई सिखला न सके। ऐसे नहीं तुम अपना दुकान निकाल बैठो। दुकान चल न सके। शिव बाबा के डायरेक्शन बिगर कुछ भी करेंगे वह शिव बाबा का तो हुआ नहीं। शिव बाबा के नाम पर तुम पाप करते हो। पैसा तुम खाते हो। उनका बनता कुछ नहीं है। ऐसे भी कोई2 दुकान निकाल बैठे हैं। और ही पापात्मा बनते जाते हैं। यह तो जैसे कि शिव बाबा के नाम पर ठगी, चोरी करते हैं। उन जैसा पापात्मा कोई होना नहीं। बीच में ही खा जाते हैं। ऐसे धंधे करने वाले भी निकल पड़े हैं। निकल पड़ेंगे। इन सभी बातें से उनको कुछ फायदा नहीं। तुम पुरुषार्थ ही करते हो कि हम यह बनें। दुनिया में मनुष्य कितने तमोप्रधान बुधि हैं। माया थप्परऐसा लगाती है जो ऐसे भी

बन पड़ते हैं। बहुत ही खौफनाक दुनिया है। जो मनुष्य को न करना चाहिए वह कर देते हैं। कितना खून, डाका आद लगाते हैं। क्या नहीं करते हैं। बिल्कुल ही तमोप्रधान बन पड़े हैं। वह है 100% सतोप्रधान, यह है 100% तमोप्रधान। अभी तुम फिर 100% सतोप्रधान बने रहे हो। इसके लिए युक्ति बतलाते हैं याद की यात्रा। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। बाप से जाकर मिलेंगे। भगवान बाप आते कहे हैं यह भी तुम अभी समझते हो। इस रथ में आये हैं। ब्रह्मा के द्वारा सुनाते हैं। जो तुमपर धारण कर औरों को सुनाते हो। तो दिल होनी चाहेवट सुनने। बाप के परिवार में जावें। यहां बाप भी है, मां भी है, बच्चे भी हैं। परिवार में जाते हैं। यह तो दुनिया ही है आसुरी। तो आसुरी परिवार से तुम तंग हो जाते हो। इसलिए धंधा आद छोड़कर आते हो बाप के पास रिफ्रेश होने। यहां रहते भी हैं ब्राह्मण। तो तुम इस परिवार में बैठे हो। घर में जावेंगे तो फिर ऐसा श्रेष्ठ परिवार नहीं होगा। वहां तो देहधारी हो जाते हैं। अगर गोरखधंधा से निकल तुम यहां सुखी रहते हो। अभी बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। खुशबूदार फूल बनना है। फूल में खुशबूएं होती हैं। सभी उठाकर खुशबू लेते। अक के फूल को नहीं उठावेंगे। तो फूल बनने लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। इसलिए दादा भी फूल ले आते हैं। ऐसा खुशबूदार फूल बनना है। घर-गृहस्थ में रहते एक बाप को याद करना है। तुम जानते हो यह सभी देह के सम्बन्धी तो खलास हो जाने हैं। तुम यहां गुप्त कमाई कर रहे हो। तुमको शरीर छोड़ना है। हम बाबा के पास जाते हैं। हम आत्मा पवित्र हो गई हैं। बाकी शरीर तमोप्रधान है। इनको अभी छोड़ना है। घूमते-फिरते भी बाप की याद में रहो। तो तुमको कोई थकावट नहीं होगी। बाप की याद में अशरीरी होकर कितना भी चक्र लगाओ, भल यहां से नीचे आबूरोड तक चले जाओ तो भी थकावट नहीं होगी। पाप कट जावेंगे। हल्के हो जावेंगे। तुम बच्चों को कितना फायदा होता है। और कोई तो जान न सके। सारी दुनिया में कितने ढेर मनुष्य हैं। अभी कहते महात्मा गांधी, वास्तव में उनको महात्मा नहीं कहना चाहिए। जो खुद ही पुकारते हैं हे पतित, पावन आकर पावन बनाओ फिर उनको महात्मा कैसे कहेंगे। खुद ही पुकारते हैं पतित-पावन आओ। तो फिर पतित को माया थोड़ेई टेका जाता। माया पावन के आगे झुकाया जाता है। (कन्या का मिसाल) जब विकारी बनती है तो सभी के आगे फिर झुकाती है। और पुकारती है हे पतित-पावन ... अरे पतित बनती ही क्यों हो जो फिर पुकारना पड़े। साधु-सन्त आद सभी पुकारते हैं। अर्थ कुछ नहीं समझते। सभी की शरीर तो भूत की पैदाइश है ना। क्योंकि रावण का राज्य है। अभी तुम रावण से निकल आये हो। इनको कहा जाता है संगम पुरुषोत्तम संगमयुग। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो रामराज्य में जाने। सतयुग है रामराज्य। कलियुग है रावण राज्य। सिर्फ त्रेता को ही रामराज्य कहें तो ल०ना० का सूर्यवंशी कहां गया। तो यह सभी ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिल रहा है। नये2 भी आते हैं। जिनको तुम ज्ञान देते हो। लायक बनते हो फिर कोई का संग ऐसा मिलता है जो लायक से नालायक बन पड़ते हैं। तुम समझते हो बाप हमको पावन बनाते हैं। तो अभी पतित बनना ही नहीं है। जब कि बाप आया हुआ है पावन बनाने। माया ऐसी है जबरदस्ती पतित बना देती है। हराये देते हैं। कहते हैं दावारक्षा करो। वाह; लड़ाई के मैदान में ढेर मरते हैं फिर रक्षा की जाती है क्या। यह भी बन्दुक की गोली बहुत कड़ी है। माया की गोली लगने से मर जाते हैं। काम की चोट खाई गोया ऊपर से गिरे। सतयुग में सभी पवित्र गृहस्थ धर्म में रहते हैं। उनको देवी-देवता कहा जाता है। अभी पवित्र बनना है जो देवी-देवता बन जाये। बाप समझाते हैं तुम भी बिल्कुल इडीयट थे। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते थे। बाबा के आने के पहले हम कुछ नहीं जानते थे। ठिक्कस-भितरमें कहना, यह क्या जानना होता है। अभी तुम समझते हो बाप कैसे आते हैं। कहां रहते हैं, कैसे आकर राजयोग सिखलाते हैं। दिखाते हैं अर्जुन के रथ पर बैठ ज्ञान दिया फिर उनको सर्वव्यापी क्यों कहते। बाप जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं उनको गाली देना ऐसा मूर्ख, मूढ़मति कोई होता नहीं। अच्छा मीठे2 बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।